हाँ कवच धारण से मेरी भी जिन्दगी संवरी

कालयक्ष वशीकरण कवच से मेरे व्यापार में बढ़ोतरी हुई और सुरक्षा मिली

गुरुजी को साष्टांग प्रणाम। मैं जयपुर का रहने वाला हूँ। मेरी एक किचन एप्लाईन्स की शॉप है। जो मेरे पिताजी के समय की है। पिछले काफी महीनों से धीरे-धीरे बिक्री का काम चोपट हो गया था। मेरे पास ही में दो और शॉप खुल गई है जो काफी सस्ता और घटिया माल लाकर बेच रहे हैं। लोग सस्ते माल से खुश भी हैं। जब से ऑनलाईन मार्केटिंग का बिजनेस शुरु हुआ हैं, उसके बाद से मार्केट बहुत ही ठप्प हो गया है। इसके अलावा मेरे पास दूसरा कोई काम भी नहीं था। जिससे मुझे बहुत ही चिन्ता हो रही थी। इधर घर का खर्चा, बच्चों की पढ़ाई का खर्चा इतना था कि घर चलाना मुश्किल हो रहा था। एक दिन में अपनी एक पार्टी से मिलने बीकानेर जा रहा था तो मुझे न्यूज पेपर पढ़ने का बहुत ही शोक था सो मैंने जयपुर रेल्वे स्टेशन से न्यूज पेपर खरीदा। उसी समय मैंने विश्व तंत्र ज्योतिष की पत्रिका देखी जो बहुत ही आकर्षक लग रही थी। मैंने वह पत्रिका भी खरीद ली। मैंने वह पत्रिका पढ़ी। पढ़ने में भी मुझे यह काफी अच्छी लगी। जिसमें हर समस्या और उसका समाधान भी लिखा हुआ था। मैं बीकानेर से काम करके पुनः घर आकर पत्रिका में दिये हुए नम्बर पर कॉल किया तो वहाँ के गुरु शिष्य ने फोन उठाया। बड़े ही आदर के साथ बात कर रहे थे। मैंने उनका नाम पूछने पर उन्होंने अपना नाम जगदीश प्रसाद बताया। मैंने उन्हें अपनी सारी समस्या के बारे में बताया। उन्होंने मुझे कालयक्ष वशीकरण कवच गले में पहनने की सलाह दी। मैंने बिना विचारे ही इस कवच को मेरे लिये भिजवाने का बोल दिया। उन्होंने कहा अभी समय लगेगा तो मैंने इसका कारण पूछा तो बोले कि शुभ दिन और श्रेष्ठ मुहूर्त्त पर यह कवच बनेगा फिर आपको भेजा जायेगा। इसके लिए भी मैंने हामी भर दी। जब कवच मेरे पास पहुंचा तो मैंने कवच के साथ कवच को पहनने की विधि के अनुसार कवच को अपने गले में पहन लिया। आप सभी विश्वास नहीं करेंगे पहले मैं भी विश्वास नहीं कर पाया कि डेढ़ महीने बाद से ही मेरी ग्राहकी अच्छी होने लग गयी थी। उस दूसरे महीने मेरी अच्छी ग्राहकी हुई जिससे घर में आमदनी अच्छी हुई। यह महीना अच्छा निकला। उसके बाद तो मेरी आर्थिक स्थिति पटरी पर आ गई। मेरे सभी काम निकलते जा रहे थे। मेरी परेशानी का ईलाज कालयक्ष वशीकरण कवच ने किया। इसके लिये मैं गुरुदेव श्रीमालीजी का जितना धन्यवाद करुं, उतना कम है। गुरुजी का कोटि-कोटि धन्यवाद।

रुपेश माथुर, (जयपुर, राजस्थान)

दसमहाविद्या कवच ने हरे मेरे कष्ट

आदरणीय पं. कमल श्रीमालीजी मैं आपकी पत्रिका का 3 वर्ष से नियमित सदस्य हूँ। आपकी दया से तथा आपके द्वारा प्रदान किये गये दसमहाविद्या कवच के प्रताप से मेरे सभी कष्ट दूर हुए हैं। गुरुजी मेरी तीन टैक्सियां है जो किराये पर चलती है। जिसमें से एक को मैं चलाता हूँ। पिछले साल मेरी दोनों टैक्सियों का एक्सीडेंट एक के बाद एक हुआ जिससे मुझे काफी घाटा हुआ। कई महीनों तक कोई आमदनी नहीं हुई। एक दिन की बात है मैं यही सोचते-सोचते कार टैक्सी चला रहा था। तभी मुझे चक्कर आया और मेरी गाड़ी एक पेड़ से टकरा गई। यह तो अच्छा हुआ उस समय कोई पेसेंजर गाड़ी में नहीं बैठा था। जब मुझे होश आया तो मैंने अपने आपको अस्पताल में पाया। मेरे हाथ में चोट आई थी और हड्डी भी क्रेक हो गई थी तथा

डॉक्टर ने तीन महीने टैक्सी चलाने को मना कर दिया था। इस अवधि में अस्पताल का बिल घर का खर्चा आदि जो कुछ जमा था वह सब खत्म हो गया। अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद मैंने फिर से अपनी टैक्सियों को ठीक कराने के लिए गैराज में दिया लेकिन खर्चा बहुत ही ज्यादा था। सोचा कुछ पैसे बच जाये तो इनका काम करवा दूंगा। लेकिन आर्थिक हालात और बदतर होते गये। एक दिन की बात है मैं बैठे-बैठे विश्व तंत्र ज्योतिष की पुस्तक पढ़ रहा था तभी मेरी नजर दसमहाविद्या कवच पर गई। मैंने भगवान का मन ही मन स्मरण करके जोधपुर कार्यालय से दसमहाविद्या कवच मंगवाया। कवच धारण करने बाद से ही मेरी आमदनी में वृद्धि शुरू हो गई। मैं दिन-रात टैक्सी चलाने लगा। कुछ पैसे जमा हुए तथा कुछ उधार लेकर मैंने अपनी टैक्सियां ठीक करवाई तथा फिर से उसे किराये पर दिया। एक साल और बीतने के बाद मेरी स्थिति फिर से मजबूत हो गई। समय फिर से मेरे साथ था। दसमहाविद्या कवच ने तो मेरे सारे कष्ट ही हर लिये। मैं दिल से आपका धन्यवाद करता हूं तथा आपके आशीर्वाद की आशा भी।

मुकेश वर्मा, (दिल्ली)

अष्टलक्ष्मी नवनिधि कुबेर कलश की स्थापना से सुखी-सम्पन्न हुआ मेरा परिवार

पूज्य श्रीमालीजी को मेरा सादर प्रणाम् मैं अपना अनुभव आपके साथ इस कलश की स्थापना के बारे में जो अनुभव हुए है। उसको इस पत्र के माध्यम से बाँटना चाहता हूँ। यह पत्र मैं कोलकाता (पंश्चिम बंगाल) से लिख रहा हूँ। मैं एक मध्यम परिवार से हूँ और आपकी पत्रिका का मैं नियमित पाठक भी हूँ। आज से एक वर्ष पूर्व मैं एक प्राईवेट जॉब करता था। मेरे परिवार में तीन बच्चे है। प्राईवेट जॉब की वजह से मेरी सैलेरी भी बहुत कम थी फिर ऊपर से मेरे परिवार के भरण-पोषण के अलावा मेरे बच्चों की शिक्षा का भी मुझ पर दायित्व था। मैं अपनी कम आमदनी की वजह से अपने परिवार का भरण-पोषण भी ठीक ढंग से नहीं कर पा रहा था और बच्चों को भी अच्छी शिक्षा के लिए अच्छी स्कूल में दाखिला नहीं करवा पा रहा था। मैं अपनी इस समस्या की वजह से बहुत ही चिंताग्रस्त रहने लगा था। आये दिन एक ही बात सताती थी कि कब मैं अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिला पाऊँगा। और कब मैं भी सुखी सम्पन्न होकर अपना जीवन गुजार पाऊँगा। परिवार की इस दयनीय स्थिति को देखकर मेरी पत्नी भी बहुत चिन्ता करने लगी। इन्हीं परेशानियों की वजह व फ्रिक करने से मेरी पत्नी भी बीमार रहने लगी। उसके इलाज पर भी बहुत पैसा खर्च हो रहा था। इन्हीं सब पेरशानियों की वजह से कर्ज भी लेना पड़ा। एक दिन की बात है मेरा एक मित्र मेरे घर पर मिलने आया। उसने भी चिन्ता में देख पूछा भाई कुछ परेशान से दिख रहे हो। तब मैंने उसको अपने परिवार की स्थिति के बारे में बता दिया। उसको भी मेरी समस्या जान फ्रिक हुई और उसने आप गुरुदेव कमल श्रीमालीजी के द्वारा बनाये गये अष्टलक्ष्मी नवनिधि कुबेर कलश के बारे में बताया और कहा कि तुम भी इस कलश को अपने घर में स्थापित करो। आप की समस्या का समाधान अवश्य ही होगा। मैंने सोच-विचार कर पैसों की व्यवस्था होने पर अष्टलक्ष्मी-नवनिधि कुबेर कलश का ऑर्डर कर दिया। मैंने उस कलश के साथ में भेजे गये विधि-विधान के अनुसार दीपावली के दिन इस कलश की स्थापना की और विधि-विधान अनुसार पूजन किया। पूजन के पश्चात् मेरे दिल को बहुत शान्ति मिली और मन में कुछ कर गुजरने की हिम्मत मिली। मैंने अपना व्यापार शुरु करने का मानस बनाया और इसके लिए मैंने बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन किया। माता लक्ष्मी की कृपा से मेरा बैंक लोन भी पास हो गया और मैंने हैण्डीक्राफ्ट का इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट व्यवसाय शुरु किया। मेरा धंधा बहुत ही अच्छा चलने लगा। आज माता रानी की कृपा से मेरा कर्जा भी चुकता होने को आ गया है और मेरे अपने बच्चे भी उच्च शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। घर में हर तरह से खुशहाली है। यह सब गुरुदेव कमल श्रीमालीजी के द्वारा बनाये गये अष्टलक्ष्मी नविनिधि कुबेर कलश की स्थापना से ही संभव हो पाया है। इसके लिए पूज्य श्रीमालीजी को कोटि-कोटि नमन व प्रणाम।

रितिक मोहन, (कोलकाता, पं.बंगाल)

जीवन के सातों सुख कवच धारण करने से मेरा जीवन खुशहाल हुआ

गुरुजी, प्रणाम! मैं भोपाल (मध्य प्रदेश) का रहने वाला हूँ। एक समय था। जब मेरे परिवार की स्थिति बहुत खराब थी। मैंने भारतीय जीवन बीमा निगम की एजेन्सी ले रखी थी। जिससे मेरे परिवार का गुजारा मुश्किल से चलता था और मेरा एक लड़का जो 10 साल का है और वह भी पढ़ाई ध्यान लगाकर नहीं करता था। कभी-कभी मेरी पत्नी की अचानक तबीयत खराब हो जाती थी। इसी कारण मैं बहुत ही ज्यादा परेशान रहता था। घर में पैसे आते हुए दिखते थे लेकिन जाते हुए दिखते ही नहीं थे। आमदनी अठ्ठनी और खर्चा रुपया वाली बात मेरे साथ घटित हो रही थी। एक दिन मैं भोपाल से जयपुर पहुंचा। वहाँ रेल्वे स्टेशन के पास बुक स्टॉल पर मेरी नजर गई और मैं वहाँ जाकर मैग्जीन देखने लग गया था। मुझे विश्व तंत्र ज्योतिष की पत्रिका दिखी और पढ़ने लग गया, जो मुझे काफी अच्छी लगी। मैंने वह पत्रिका खरीद ली और मैंने वह पूरी पत्रिका पढ़ी। उसमें मेरी सारी समस्याओं का समाधान जीवन के सातो सुख कवच में दिया हुआ था। मैंने पत्रिका के अन्दर दिये गुरुजी के कार्यालय जोधपुर के नम्बर पर फोन किया और मैंने अपनी सारी समस्यां वहां बताई तो वहां से मुझे जीवन के सातों सुख कवच धारण करने की सलाह दी और मैंने कवच का ऑर्डर कर दिया। उन्होंने मुझसे मेरा नाम, पिता का नाम, माता का नाम, गौत्र, जन्म स्थान और मेरा पता नोट कर लिया। मैंने पैसे गुरुजी के बैंक एकाउंट में जमा करवा दिये और मेरे नाम से कवच बनाकर कवच मुझे डाक द्वारा एक सप्ताह बाद प्राप्त हो गया। कवच के साथ दी गई विधि के अनुसार मैंने कवच अपने गले में पहन लिया। धीरे-धीरे मेरे पास बीमा करने के लिए लोगों का आना शुरु हो गया। जिससे मेरी आमदनी बढ़ने लग गयी थी। मैं अच्छे पैसे कमाने लग गया था। मेरे घर में पैसे की भी सेविंग होने लग गयी थी। मेरा बच्चा भी पढ़ाई भी ढ़ंग से करने लग गया था। जिससे वह अब अच्छे नम्बर ला रहा है। जिससे मेरे घर में पुनः खुशियां आ गई। मुझे जीवन के सातो सुख मिल गये। मैं गुरुजी का तहेदिल से धन्यवाद करता हूँ।

राजेश पारीक, (भोपाल, मध्य प्रदेश)

जीवन धन्य हुआ दसमहाविद्या कवच के धारण करने से

पूज्य श्रीमालीजी चरण वंदन! आपकी पत्रिका हमारे सभी परिवारजन को अच्छी लगती है। इसके शौकीन हमारे घर के व्यक्ति ही नहीं बल्कि आस-पड़ौस के लोग भी हैं। सभी हमसे मांगकर पत्रिका ले जाते हैं तथा कितने व्यक्तियों ने तो आपके यहाँ से सामान भी मंगवाया है। श्रीमालीजी मैं आज से ठीक डेढ़ साल पहले तक कोई काम-धाम ठीक से नहीं करता था। काम होता तो कर आता नही तो घर पर ही टी.वी. देखता रहता था। मेरी आदत खराब हो चुकी थी। मेरी आदतों के बारे में आज मुझे खराब लग रहा है। उस समय तो इस पर ध्यान नहीं दिया। मैं कहीं पर भी काम पर जाता बस 10-15 दिन से ज्यादा कभी नहीं करता और घर पर ही बाकी दिन आराम करता। जब कमाया हुआ पैसा खर्च हो जाता तो फिर से काम करता। इस आदत से मेरी पत्नी बहुत गुस्से में रहती थी। उसने मुझे कहीं बार छोड़कर जाने की धमकी भी दी। लेकिन मेरी जिंदगी में कोई बदलाव नहीं आया। मेरा बच्चा स्कूल जाने लग गया था। जिससे खर्चा भी बढ़ गया था। मेरी हालत इतनी खराब हो गई थी कि मैं अब रेगूलर काम नहीं कर पा रहा था। चाहकर भी नहीं। आर्थिक स्थिति बहुत खराब रहने लगी। पिताजी अब कुछ मदद नहीं करते थे। बस उन्होनें कह दिया कि अब सभी बेटे अपना-अपना खर्च स्वयं चलायेंगे। मैं ज्यादा काम करने के कारण बीमार पड़ गया। उस समय मेरे एक मित्र ने जो कि अचानक ही एक क्लिनिक में मुझे मिला तब उसने मुझसे अपनी स्थिति के बारे में पूछा तो मैंने उससे सारी आपबीती सुना दी। फिर उसने मुझे विश्व तंत्र ज्योतिष पत्रिका के बारे में बताया और कहा कि यह पत्रिका तुम पहले पढ़ लेना अगर तुम्हें इस पर विश्वास हो तो इस दसमहाविद्या कवच को मंगवाकर धारण कर लेना तेरी सारी मुसीबतें छंट जायेगी। मैंने घर पर आकर सबसे पहला काम पत्रिका को अच्छी तरह से पढ़ने का ही किया। पत्रिका के अंदर काफी लोगों ने अपनी समस्या से निजात मिलने की बधाई दी थी इसलिए मैंने भी दसमहाविद्या कवच मंगवाकर अपने गले में धारण कर लिया। कवच को धारण करके मैं एकदम से कवच की बात भूल गया। लेकिन कामकाज में मेरी निरन्तरता बनने लगी। साथ ही स्वास्थ्य अच्छा रहने लग गया था। मुझे अच्छी जगह काम भी मिल गया। मेरी जिंदगी में यह सारा बदलाव दसमहाविद्या कवच धारण करने से ही आया है। आपकी कृपा से जिंदगी एकदम सुखपूर्वक चल रही है। मेरा तो जीवन ही

कल्याणी तंत्र रक्षा कवच धारण करने से भूत-प्रेत की छाया से मुक्ति मिली

पूज्य गुरुजी प्रणाम! मैं आपकी पत्रिका की सदस्या पिछले साढ़े चार साल से हूँ। मुझे आपकी पत्रिका का इंतजार हर माह रहता है। जब कभी यह नहीं मिलती तो मैं अपने पति से कहकर बुक स्टॉल से भी मंगवाती हूँ। बात उन दिनों की हैं जब मैं अपनी बहन के घर दो-तीन दिन रहने गयी थी। जब मेरी बहन ने मुझे बताया कि उसे रात में अपने आस-पास छाया जैसा दिखाई देता है। कभी सपने में भी वह छाया दिखाई देती हैं तो उठ बैठती हूं सोचने लगती हूं कि यह क्या था फिर रात भर सो नहीं पाती हूं। किसी ने कहा भूत-प्रेत का असर है मैं झाड़ा करवाकर भी आई लेकिन फिर भी छाया दिखाई देती है। मैंने पत्रिका में इस बारे में बहुत कुछ पढ़ा था इसलिए मैंने कहा कि यह सब चीजें तो होती ही आई हैं मैंने उसे इसके लिए कल्याणी रक्षा कवच पहनने को कहा। उसने पहले तो बहुत कुछ पूछा लेकिन अंत में उसने मेरी बात को माना और कवच धारण करने के लिए राजी हो गई। मैंने कवच प्राप्त कर उसे भिजवा दिया। कवच धारण करने के 20-25 दिन बाद उसने मुझे फोन किया कि जिस दिन से मैंने वह कवच पहना है, उसी दिन से मुझे बुरे सपने नहीं आते हैं तथा रात के समय भी जो छाया मुझे दिखती थी वह कवच धारण करने के बाद गायब हो गई हैं। अब मैं पूरी रात चैन से सो पाती हूं। मेरा स्वास्थ्य भी सुधर रहा हैं। तीन महीने बाद अचानक वह मेरे घर आई तो मैं उसे देखकर चौंक गई। जब मैंने उससे उस छाया वाली बात पूछी तो उसने कहा अब मैं बिलकुल ठीक हूँ। मुझे कोई परेशानी नहीं है। मैं उठते ही इस कवच को प्रणाम करती हूँ और भगवान को मन ही मन याद करती हूं। अब मैं अपने आपको पूर्ण रूप से सहज महसूस कर रही हूँ।

मीना जैन, (मलकानगिरी, उड़ीसा)

शनि/साढ़ेसाती कष्ट निवारण कवच धारण करने से हुई कष्टों में कमी

प्रिय गुरूजी, मुझे बैंगलोर में रहते हुए 12 साल हो गये हैं। हम राजस्थान के पाली गांव से है लेकिन एक दिन सभी कुछ समेट कर बैंगलोर धंधे पानी के लिए चले आये। बस तभी से यहीं पर जिंदगी गुजार रहे हैं। मैं कपड़े का कारोबार कर रहा हूं। मेरी दो दूकानें भी हैं अभी पिछले साल से मेरे मस्तिष्क में पीड़ा रहने लगी है। दूकान पर बैठने का मन ही नहीं करता। कोई काम करने का मन नहीं करता। ग्राहक की संख्या कम होने लग गयी थी। ऐसे में मेरे कारोबार को संभाला मेरे बेटे ने लेकिन वो इतना सब कुछ नहीं जानता फिर भी गाड़ी खींच रही थी। मेरे घरवालों को मेरी चिंता सतायें जा रही थी। मैं उन्हें परेशान देखकर मैंने एक ज्योतिष को अपनी जन्मकुंडली दिखाई तो उसने कहा कि आपको शनि की साढ़ेसाती चल रही है यह सब कुछ इसी वजह से हो रहा है। मैंने यह बात अपने मित्र को बताई तो उसने पं. कमल श्रीमालीजी के बारे में बताया कि वे हर समस्या का सटीक और अच्छे उपाय बताते हैं। इसके लिये मैंने उससे श्रीमालीजी के कार्यालय के नम्बर लेकर वहाँ पर फोन किया और मैंने अपनी प्रोब्लम बताई तो उन्होंने मुझे शनि साढ़ेसाती कष्ट निवारण कवच धारण करने को कहा। मैंने अपने लिए कवच भेजने के लिए जरूरी जानकारी नोट करवाई। कुछ दिनों बाद मुझे कवच मिल गया। कवच मिलते ही मैंने सुबह ही नहा-धोकर उस कवच की धूप-दीपक करके अपने गले में धारण लिया। आप विश्वास नहीं मानेंगे एक सप्ताह बाद ही मुझे महसूस होने लगा कि अब मेरे मस्तिष्क में वह पीड़ा नहीं उठ रही न ही मन भी उचाट हो रहा था। अब मैंने फिर से अपना काम संभाल लिया है। गुरुजी अगर वक्त रहते आपकी सलाह न मिली होती तो शायद मेरा कारोबार चौपट हो सकता था। मेरी वर्षों की मेहनत पर पानी फिर सकता था। भगवान आपको लंबी उम्र दे।

पंकज कुमार शुक्ला, (बैंगलोर)

रोजगार प्राप्ति कवच ने दिलाई मुझे नौकरी

गुरुजी, मैंने आपकी पत्रिका में बहुत पढ़ा है कि इस कवच को धारण करने से यह लाभ हुआ व इस कवच को धारण करने से यह लाभ हुआ। यहाँ तक कि रोजगार प्राप्ति कवच धारण करने से लोगों को रोजगार भी मिला है। मैं भी एक शिक्षित बेरोजगार था जो कि बेराजगारों की भीड़ में खड़ा था। काफी कोशिश करने के बाद भी जब मेरी नौकरी नहीं लगी तो मैंने भी रोजगार प्राप्ति कवच को पहनने का ख्याल मेरे दिलोदिमाग में चलने लगा। मैंने पापा से इस बारे में बातचीत करके उस कवच को बनवाने के लिए अपनी डिटेल भेज दी। कवच मिलते ही मैंने वह कवच जिस तरह से धारण करने के लिए लिखा गया था मैंने ठीक वैसा ही किया। कवच धारण करने के 25 दिन बाद ही कवच का प्रभाव दिखा। मुझे एक कंपनी ने चलाकर फोन किया और मुझे अपने डाक्युमेंट के साथ ऑफिस में बुलाया। ऑफिस पहुंचते ही उन्होंने ऑरिजनल सर्टिफिकेट देख कर उन्होंने मुझे नौकरी पर रख लिया और शुरुआती तनख्वाह के तौर पर 15 हजार रुपये के पेमेन्ट पर रख लिया और साथ ही 3 साल का एग्रीमेंट कर लिया। इस मामले में मेरी सोच बिलकुल सही निकली। रोजगार प्राप्ति कवच धारण करते ही इसने अपना प्रभाव दिखाया और मुझे बेरोजगार नहीं रहने दिया। गुरुजी आपकी कृपा से मुझे जो रोजगार मिला है उसके लिए मैं आपका अत्यंत आभारी हूं। धन्यवाद।

रविन्द्र व्यास,(आदिलाबाद, तेलंगाना)

''गोमती चक्र मुद्रिका/पैंडल''

रोग मुक्ति, शत्रु नाश, नौकरी, उन्नत्ति, दाम्पत्य सुख, व्यापार वृद्धि में सहायक

जीवन में हमें अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। कुछ परेशानियां स्वयं ही समाप्त हो जाती हैं जबकि कुछ समस्याओं के निदान के लिए विशेष प्रयास करने पड़ते हैं। तंत्र शास्त्र के माध्यम से जीवन की कई समस्याओं का निदान किया जा सकता है। गोमती चक्र एक ऐसी दुर्लभ वस्तु है और आसानी से प्राप्त नहीं होती। जिसका उपयोग तंत्र क्रियाओं में किया जाता है। यह बहुत ही साधारण सा दिखने वाला पत्थर है लेकिन यह बहुत प्रभावशाली है। गोमती चक्र धारण करने से मानसिक शांति, रोग और भय से मुक्ति, दरिद्रता से मुक्ति, कोर्ट-कचहरी के मामलों में राहत, भूत-प्रेत बाधा, शत्रु पीड़ा, दाम्पत्य सुख, संतान प्राप्ति और खास कर धन संचय में इसकी सिद्धि के विषय में अनेको मत-मतान्तर देखे जाते हैं। कुछ इसे स्वयं सिद्ध बताते हैं तो कही इसकी सिद्धि के निर्देश मिलते हैं। होली, दीपावली, नवरात्रि आदि प्रमुख त्यौहारों पर गोमती चक्र की विशेष पूजा की जाती है। अन्य विभिन्न मुहूर्तो के अवसर पर भी इनकी पूजा लाभदायक मानी जाती है जैसे-गुरुपुष्य, सर्वार्थसिद्धि योग तथा रविपुष्य योग पर इनकी पूजा करने से घर में सुख-शांति बनी रहती है- खासकर मारण, सम्मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन जैसे प्रयोग में और व्यापार वृद्धि, अचल-स्थिर लक्ष्मी, शत्रु भय, पीड़ा, देह व्याधि, दुस्वप्न जैसे विषयों में इसका प्रयोग अत्यंत प्रभाव से देखा गया है, लेकिन अभिमंत्रित करने से गोमती चक्र का प्रभाव सौ गुना बढ़ जाता है।

गोमती चक्र न्यौछावर-2100/-अंगूठी, लॉकेट-1500/-

सम्पर्क करें:- **विश्व तंत्र ज्योतिष**

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर-342001 (राज.)
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.fameandfortune.org

आप सीधे ही 'विश्व तंत्र-ज्योतिष' के बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
आपकी सुविधा के लिये बैंक एकाउन्ट नम्बर इस प्रकार हैं
STATE BANK OF INDIA A/C NO. 100-563-410-66
(All Amount Payble at Jodhpur Account)